मुद्रा एवं बैंकिंग

मुद्रा (Money)

→ मुद्रा को ऐसे किसी भी माध्यम के रूप मे परिभाषित कर सकते है, जिसका वस्तुएँ एंव सेवाओ खरीदने के लिए उपयोग किया जा सकता है। अर्थात मुद्रा वस्तु विनिमय का माध्यम है।

पृष्ठभूमि :— मुद्रा की उत्पत्ति का इतिहास मे कोई खास तिथि निर्धारित है हँलाकि भारत के संदर्भ मे ये छठी सदी के आसपास माना जाता है, उस समय मे ये मुद्राएँ केवल सोने एंव चाँदी जैसी मुल्यवान धातुओ से निर्मित किए जाते थे।

मुद्रा के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण विकास वचन पत्र अर्थात प्रॉमिसरी नोट (promissory note) था। यह प्रक्रिया तब प्रारंभ हुई जब लोग स्वर्णकारो के पास अपना अतिरिक्त सोना रखने लगे। वे लोगो के जमा सोने को अपने पास रखते थे, बदले मे स्वर्णकार जमाकर्ताओ को एक रसीद देते थे।

रसीद मे यह उल्लेख होता था कि उन्होने कितना सोना जमा किया है। अंतत: वस्तुओ के क्रेताओ द्वारा वस्तुओ के विक्रेताओ को सोने का भौतिक हस्तांतरण किए जाने के बजाए वस्तुओ और सेवाओ के बदले इन रसीदो का सीधे व्यापार (लेन देन) किया जाने लगा।

क्रेता और विक्रेता, दोनो को स्वर्णकारो पर विश्वास करना पडता था क्योकि सारा सोना स्वर्णकार के पास जमा होता था, और स्वर्णकार के ग्राहको के पास केवल एक रसीद होती थी। ये जमा रसीदे लोगो की माँग पर सोने की एक निश्चित मात्रा का भुगतान करने के वादे का प्रतीक होती थी। इसलिए ये कागजी मुद्राएँ सीधे भौतिक वस्तुओ के प्रतिनिधि बन गई। जिन पर वे आधारित होती थी अर्थात ये कागजी मुद्राएँ सीधे भौतिक वस्तु से संबधित होती थी। इनमे से कई प्रारंभिक स्वर्णकार बैंक के रूप मे विकसित हो गए। ये बैंक अपनी सेवा के बदले मे अतिरिक्त धन (कमीशन) लेते थे। और वचन पत्र जारी करते थे। इन वचन पत्रो का उपयोग वाणिज्य मे किया जाने लगा।

* मुद्रा की कुछ आधारभूत विशेषताएँ

- मुद्रा को आम सहमति से विनिमय के एक माध्यम के रूप मे स्वीकार किया जाता है। या क्रय शक्ति को स्थानांतरित करने के एक साधन के रूप मे स्वीकार किया जाता है।
- यह आसानी से स्वीकार्य होनी चाहिए।
- इसका एक ज्ञात मूल्य होना चाहिए
- उसके वजन की तुलना मे उसका मूल्य अधिक होना चाहिए।
- नकली मुद्रा बनाना अत्यंत कठिन होना चाहिए।
- इसे वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए भुगतान हेतु व्यापक रूप स्वीकार किया जाना चाहिए
- इसका एक स्थान से दुसरे स्थान पर स्थानांतरण करना आसान होना चाहिए।
- यह दीर्घावधि तक खराब नही होनी चाहिए।
- यह आसानी से मानकीकृत किए जाने योग्य होनी चाहिए जिससे इसके मूल्य का पता लगाना सरल हो।

* मुद्रा के कार्य और महत्व (function and signification of Money.)

(1.) विनिमय का माध्यम :— मुद्रा सभी वस्तुओ और सेवाओ के विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। इसका उपयोग वस्तुओ और सेवाओ के बदले मे भुगतान के लिए किया जाता है। विनिमय के एक माध्यम के रूप मे मुद्रा का उपयोग वस्तुत: वस्तुओ और सेवाओ का आदान प्रदान करने मे लगने वाले समय को कम करके आर्थिक क्षमता को बढाता है। इसने वस्तु विनिमय प्रणाली मे व्याप्त आवश्यकताओ के दोहरे संयोग की कठिनाई का समाधान किया।

(ii) लेखा की ईकाई :— मुद्रा मूल्य का मापदंड करती है। मुद्रा की एक प्रमुख भूमिका इसका लेखे की एक ईकाई होना है। लेखे की ईकाई का अर्थ है कि प्रत्येक वस्तु एंव सेवा का मूल्य मुद्रा के रूप मे मापा जाता है। अर्थात इसका उपयोग अर्थव्यवस्था मे मूल्य के मापन के लिए किया जाता है। जिस प्रकार हम दुरी को मीटर तथा वजन को किलोग्राम मे मापते है। उसी प्रकार हम मुद्रा द्वारा वस्तुओ एंव सेवाओ के मूल्य को मापते है।

(iii) मूल्य का संचय :— मूल्य के संचय से आशय धन के संचय से है। मुद्रा मूल्य संचय के साधन के रूप मे भी कार्य करती है। यह समय के साथ क्रय शक्ति का एक भंडार है. अर्थात मुद्रा धन संग्रह का सबसे सस्ता, सर्वमान्य, और सुविधाजनक साधन है, जिसके मूल्य मे समय के साथ शीघ्रता से कमी नही आती है।

(iv) आस्थगित भुगतानो के मानक :— मुद्रा न केवल वस्तुओ और सेवाओ के वर्तमान लेनदेन की सुविधा प्रदान करती है। बल्कि उनके क्रेडिट लेनदेन की सुविधा भी उपलब्ध कराती है। भविष्य मे भुगतान के लिए वर्तमान वस्तुओ का आदान प्रदान करते समय यह क्रेडिट लेनदेन की सुविधा देती है।

* आस्थगित भुगतान :— आस्थगित भुगतान वे होते है, जिनको भविष्य मे देने का वादा किया जाता है।

(v) राष्ट्रीय आय का वितरण :— इसके माध्यम से आय विधि का उपयोग कर राष्ट्रीय आय का मापन किया जाता है। मुद्रा की अनुपस्थिति मे ऐसे उत्पादन का वितरण करना संभव नही होता है।

मुद्रा के घटक

→ एक आधुनिक अर्थव्यवस्था के आर्थिक तंत्र मे विद्यमान मुद्रा के अंतर्गत निम्नलिखित घटक सम्मिलित है।

- करेंसी घटक
  - सिक्के
    - सिक्को के अंतर्गत सभी धात्विक मुद्राएँ सम्मिलित है।
    - → सिक्का सांकेतिक मुद्रा (टोकन मनी) है।
    - → सिक्को को ढालने पर सरकार का एकाधिकार होता है।
    - → वे छोटे मूल्यो के लेन देन के लिए उपयोगी होते है।
  - करेंसी नोट
    - → करेंसी नोट पत्र मुद्रा को प्रदर्शित करते है।
    - भारत मे प्रचलित लगभग सभी पत्र मुद्रा RBI द्वारा जारी की जाती है।
- जमा मुद्रा घटक
  - माँग जमा
    - यह खाताधारको की माँग पर बैंक द्वारा देय होती है।
  - सावधि जमा
    - सावधि जमा मे परिपक्वता की एक निश्चित अवधि होती है। निर्धारित समय के पश्चात इनको निकाल सकते है।

* भारत मे मुद्रा की आपूर्ति

→ मुद्रा आपूर्ति का अर्थ किसी दिए गए समय मे देश की अर्थव्यवस्था मे प्रचलित मुद्रा की कुल आपूर्ति से है। इसका आशय एक अर्थव्यवस्था मे किसी भी समय पर मुद्रा की उस मात्रा से है, जो परिवारों, फर्मों या व्यापारिक संस्थानों द्वारा लेन देन और ऋणों के निपटान के लिए रखी गई है।

कुछ अर्थशास्त्रीयो द्वारा मुद्रा आपूर्ति को मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। अर्थशास्त्री किसी अर्थव्यवस्था मे मुद्रा की आपूर्ति का विश्लेषण करते है. तथा अर्थव्यवस्था मे मुद्रा की मात्रा को कम या अधिक कर तथा ब्याज दरों को नियंत्रित करके आर्थिक नीतियो का निर्माण करते है।

मुद्रा आपूर्ति का मापन

मुद्रा आपूर्ति के मापन के लिए M_1, M_2, M_3 और M_4 का उपयोग किया जाता है।

* **M1 मुद्रा** :— इसमे उन सभी वित्तीय परिसंपत्तियो को सम्मिलित किया जाता है, जिन्हे आम तौर पर भुगतान के साधन के रूप मे स्वीकार किया जाता है।

M_1 = जनता के पास करेंसी + वाणिज्यिक बैंको के पास निवल माँग जमाएँ (जनता हेतु) + RBI के पास अन्य जमाये

→ M_1 को संकीर्ण मुद्रा के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इसके अंतर्गत मुद्रा को संकीर्ण रूप मे परिभाषित किया गया है।

→ इसमे केवल उन्ही परिसंपत्तियो को सम्मिलित करती है, जो अत्यधिक तरल है।

* **M2 मुद्रा** :— इसमे M_1 मुद्रा एंव डाक घर बचत जमाये सम्मिलित किया जाता है

→ ये कम तरल होती है (M_1 की अपेक्षा) परंतु विस्तृत होती है।

or

M_2 = M_1 + डाक घर बचत जमाये

* M3 मुद्रा या विस्तृत मुद्रा

M3 = M1 + सभी व्यापारिक बैंको और सहकारी बैंको के सावधी जमा

→ इसे व्यापक या विस्तृत मुद्रा के रूप मे भी जाना जाता है। क्योंकि इसमे धन की व्यापक परिभाषा शामिल है।

→ M1 और M3 मे मुख्य अंतर सावधि जमा को सम्मिलित करना एंव नही करना है। संकीर्ण मुद्रा मे सावधि जमा (Time deposite) को सम्मिलित नही किया जाता है, क्योंकि वह वास्तविक अर्थो मे तरल नही है।

* M4 मुद्रा :— M3 + डाकघर की कुल जमा शामिल होती है।

नाम	प्रकार	तरलता
M1	संकीर्ण मुद्रा	सर्वाधिक
M2	संकीर्ण मुद्रा	M1 से कम
M3	विस्तृत मुद्रा	M2 से कम
M4	विस्तृत मुद्रा	सबसे कम